

खुजलाने से खुजली मिट क्यों जाती है?

आपने भी यह ज़रूर महसूस किया होगा कि जब शरीर के किसी भाग पर खुजाल चलती है तो खुजलाने से राहत मिलती है। सवाल है कि यह राहत क्यों मिलती है?

इस सम्बंध में शोधकर्ताओं ने कम से कम बंदरों में उन तंत्रिकाओं को खोज निकाला है जो खुजलाने की प्रक्रिया से शांत हो जाती हैं। यानी उनकी मस्तिष्क को संकेत भेजने की गति धीमी पड़ जाती है। आशा है, बंदरों पर किए गए प्रयोगों से इन्सानों को राहत दिलाने में कुछ मदद मिलेगी।

वैसे खुजली होती ही क्यों है? ऐसा लगता है कि कई सारे ऐसे उद्दीपन होते हैं जो संवेदी तंत्रिकाओं को उत्तेजित करते हैं कि वे स्पाइनोथेलेमिक ट्रैक्ट से मस्तिष्क को संदेश भेजें। ये संदेश खुजली की अनुभूति पैदा करते हैं। इस संदर्भ में हिस्टेमीन एक पदार्थ है जो तंत्रिकाओं को उत्तेजित करता है।

मिनेसोटा विश्वविद्यालय के शोधकर्ता देखना चाहते थे कि इन तमाम तंत्रिकाओं में से कौन-सी खुजलाने पर शांत हो जाती हैं। इसके लिए उन्होंने कुछ मैकॉक बंदर लिए

और उन्हें बेहोश कर दिया। इनके स्पाइनल ट्रैक्ट में कुछ इलेक्ट्रोड वगैरह लगा दिए गए। अब इन बंदरों की टांग में हिस्टेमीन का इंजेक्शन लगाया गया। हिस्टेमीन का इंजेक्शन लगते ही इनकी स्पाइनोथेलेमिक ट्रैक्ट की तंत्रिकाएं उत्तेजित होकर संदेश भेजने लगीं। मगर उस स्थान की चमड़ी को खुजलाने से कुछ तंत्रिकाओं द्वारा भेजे जाने वाले संदेशों में कमी आई। इसका मतलब यह हुआ कि खुजलाने का असर इन्हीं स्पाइनोथेलेमिक तंत्रिकाओं पर हुआ था।

यह तो हुई बंदरों की बात। शोधकर्ता अब उन्हीं तंत्रिकाओं जैसी तंत्रिकाएं इन्सानों में भी खोजना चाहते हैं। एक बार ये तंत्रिकाएं पता लग जाने पर उनके बारे में कुछ कर पाने की संभावना बनेगी। खास तौर से कुछ बीमारियों में बहुत ज़्यादा खुजली की समस्या होती है। उनमें राहत पहुंचाने का कोई रास्ता इसमें से निकल सकता है। फिलहाल जो दवाइयां उपलब्ध हैं वे बहुत कम राहत देती हैं और खुजलाने से चमड़ी को नुकसान पहुंचाने का खतरा तो रहता ही है। तो उम्मीद है कि बेहतर दवाइयां सामने आएंगी। (*स्रोत फीचर्स*)